प्रलयंकारी अश्वराज

लेखिका : मीनू वाही - संपादन : मनीष गुप्ता
पटकथा : तरुणकुमार वाही
कलानिर्देशन : प्रताप मुळीक - चित्र : विठ्ठल कांबळे
रंगसज्जा : संजय विसपुते - सुलेख : पालवणकर

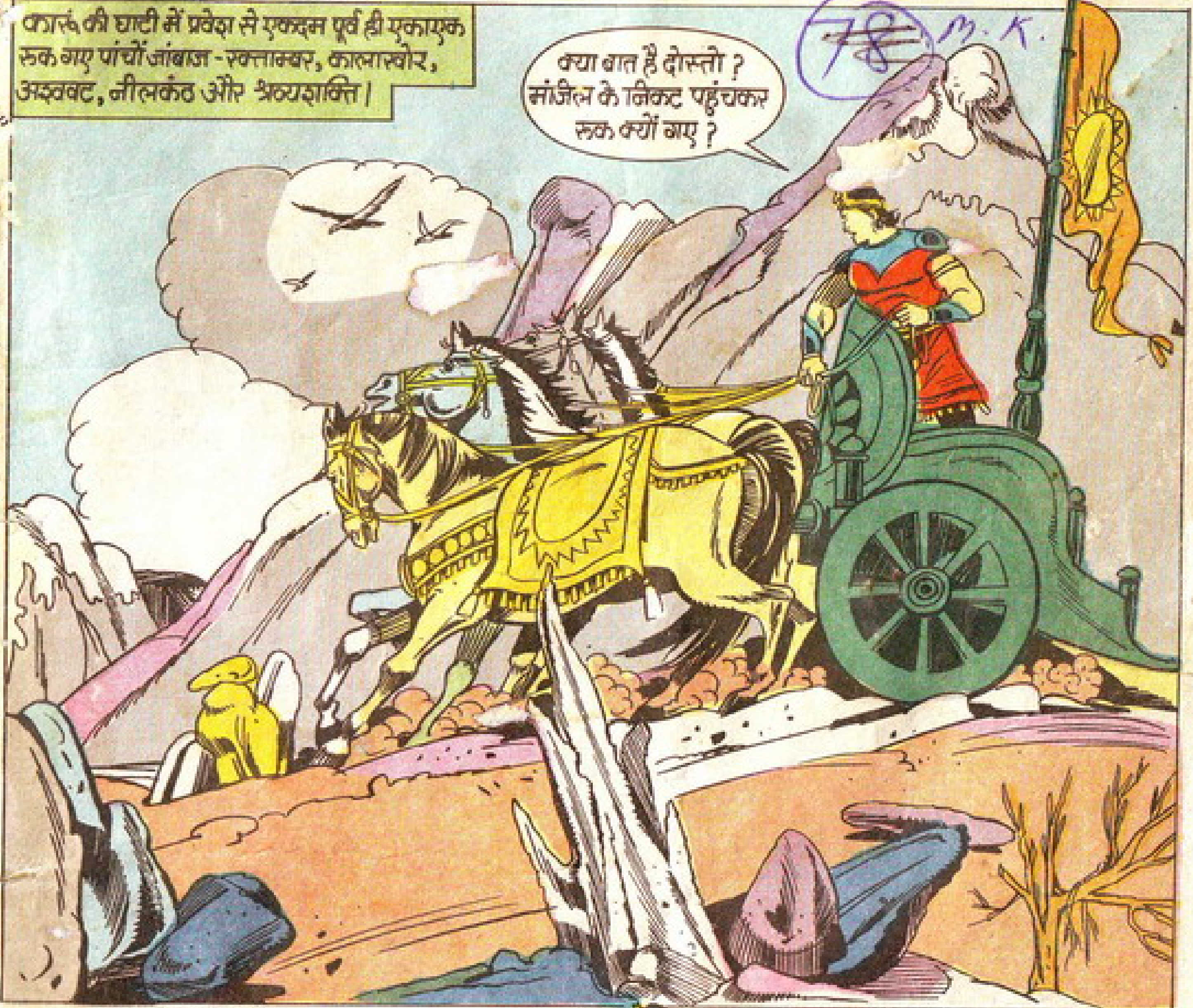

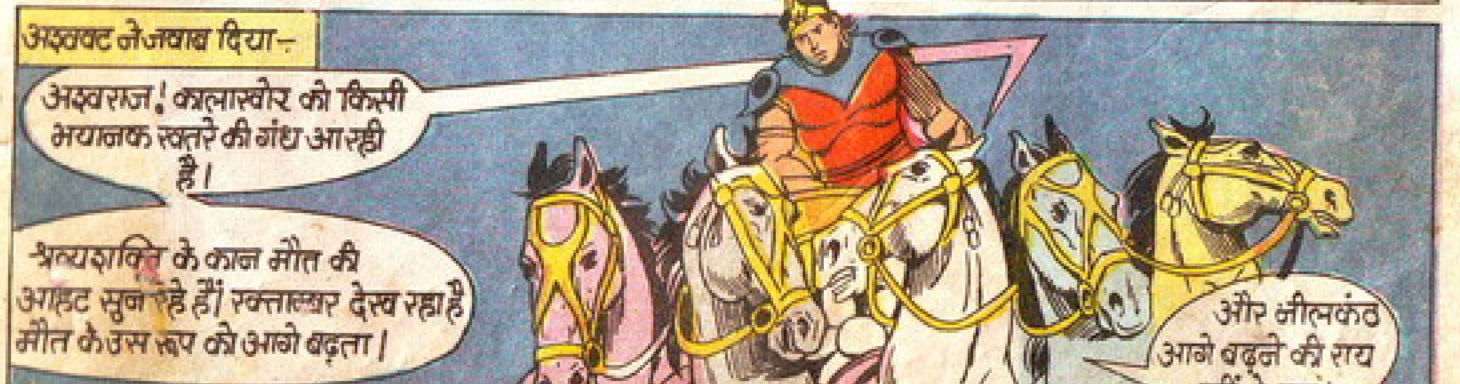

© RAJA POCKET BOOKS

उफ! कैसा भयानक खतरा था वो!
आररररर
बचो अश्वराज! इस बला से बचो!
ओह! क्या बला है यह?

बला ने जोरदार सांस छोड़ी उठ खड़ा हुआ बर्फ का तूफान —
ओह आह!
अश्वराज घोड़ों सहित दब गया बर्फ के पहाड़ में। जमने लगा नसों में बहता लहू।
अश्वराज! इस पहाड़ को जल्दी न हटाया तो हम सबकी कब्र बन जायेगा ये।
बर्फ के इस पहाड़ सहित निगलने के लिये बला अपना विशाल जबड़ा हमारी ओर बढ़ा रही है!

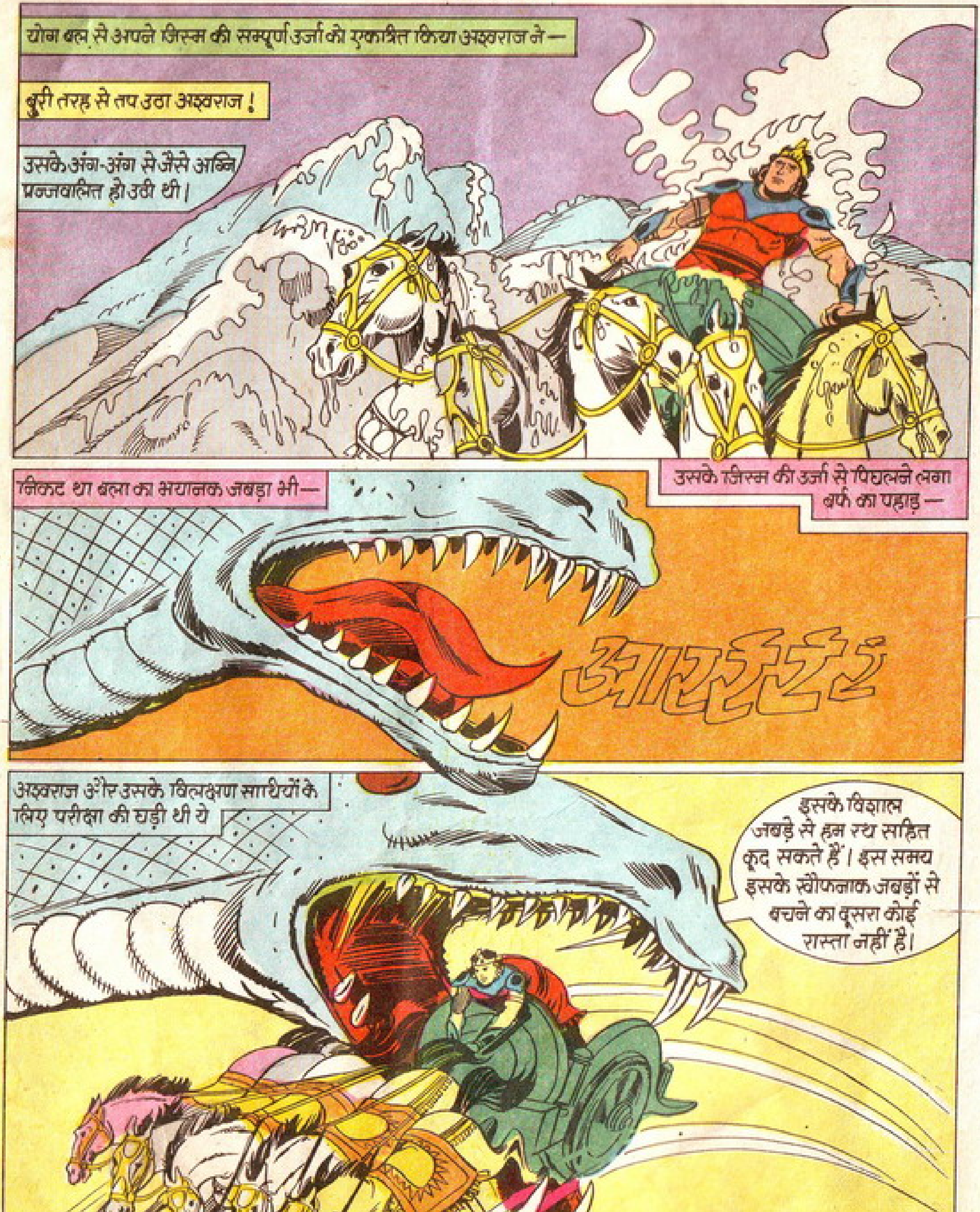
योग बल से अपने जिस्म की सम्पूर्ण उर्जा को एकत्रित किया अश्वराज ने —
बुरी तरह से तप उठा अश्वराज !
उसके अंग-अंग से जैसे अग्नि प्रज्जवलित हो उठी थी।
निकट था बला का भयानक जबड़ा भी —
उसके जिस्म की उर्जा से पिघलने लगा बर्फ का पहाड़ —
आर्रर्ईईं
अश्वराज और उसके विलक्षण साथियों के लिए परीक्षा की घड़ी थी ये
इसके विशाल जबड़े से हम रथ सहित कूद सकते हैं। इस समय इसके खौफनाक जबड़ों से बचने का दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

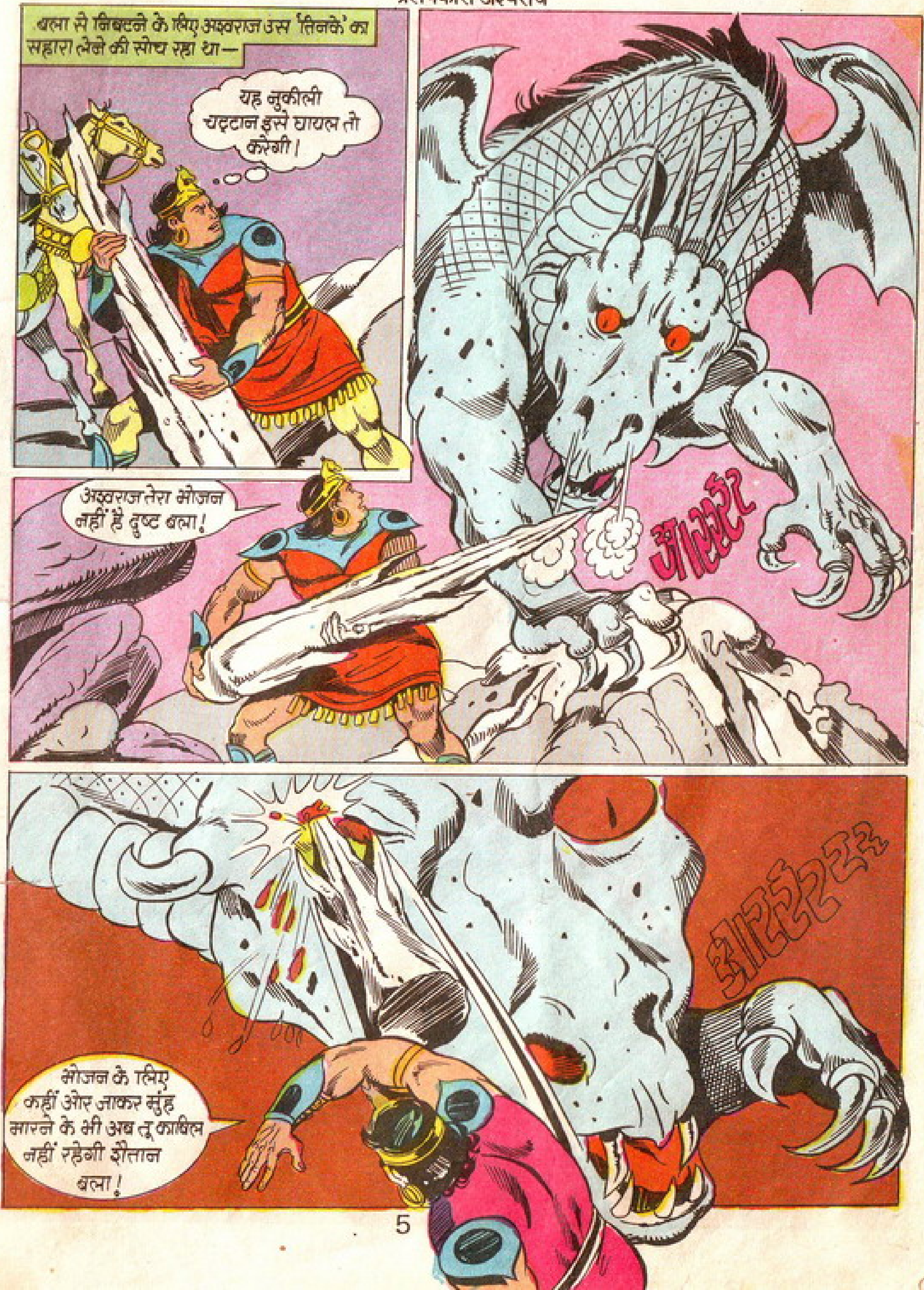
बला से निबटने के लिए अश्वराज उस 'तिनके' का सहारा लेने की सोच रहा था—
यह नुकीली चट्टान इसे घायल तो करेगी!
अश्वराज तेरा भोजन नहीं है दुष्ट बला!
आर्घ्ररर
भोजन के लिए कहीं और जाकर मुंह मारने के भी अब तू काबिल नहीं रहेगी शैतान बला!
आर्रर्रर्र

महाबली! महा अश्वमानव! विलक्षण! इच्छाधारी अश्वराज! अब परिवर्तित हो गया खुद उसी बला के रूप में—
आर्र्र्र
मैं बनगया अश्वराज से दुष्ट बला!
बहुत खूब अश्वराज! बहुत खूब!

अब टक्कर थी बराबरी की—
अश्वराज से पंजा लड़ायेगी ?
अश्वराज का भरपूर शक्तिशाली •••• प्रचण्ड घूंसा पड़ा बला के जबड़े पर—
मैंने कहा था न कि अब तू भोजन के लिए कहीं और भी मुंह मारने के काबिल नहीं रहेगी दुष्टबला !
तड़ाक
बला के जिस्म की सबसे नाजुक जगह ••••उसका कंठ चीर डाला अश्वराज ने—
आखिरी चिंघाड़ के साथ ही मौत की नींद सो गई बला—

मौत पर विजय पाकर कारूं घाटी में प्रवेश कर गया अश्वराज!
यही था कारूं का तिलिस्म। जहां कई बरसों से विशाल कारूं का खजाना बन्द पड़ा था।
मैं वापस आऊंगा अश्वकीर्ती मैं वापस आऊंगा।
पिछले जन्म की यादें ताजा हो उठीं—
अश्ववट कह उठा—
अश्वराज! तुम्हें याद है, पिछले जन्म में जब तुमने कारूं का तिलिस्म खोला था तो महा-संग्राम छिड़ गया था।
कारूं का तिलिस्म देखकर मुझे सब कुछ याद आ गया है अश्ववट!
मैं इस तिलिस्म में अश्व-कीर्ती को कैद कर गया था। अश्ववट, अगर कुसुमपुरी ही अश्वकीर्ती है तो मुझे जानना है कि वह इस कैद से कैसे स्वतन्त्र हुई?

कालू के तिलिस्म को एकबार फिर खोल रहा था अश्वराज —
भीतर कदम रख दिया उसने —
अश्वकीर्ती! कहां हो तुम अश्वकीर्ती?
खजाना वहीं रखा था। पर अश्वराज जिसे पुकार रहा था, वह कहां थी —
अश्वकीर्ती! मैं तुमसे केवल यही एक प्रश्न पूछना चाहता था कि तुमने मुझसे छल क्यों किया?
अगले ही पल उछल पड़ा था वह!
अश्वकीर्ती! उफ, अश्वकीर्ती! यह.... यह तुम ही हो अश्वकीर्ती! यही वस्त्र पहने थी तुम उस दिन!
और फिर खून से लिखी उस इबारत पर निगाहें जम गईं अश्वराज की —
अश्वराज! मैं जानती हूं कि तुम एक दिन वापस लौटोगे। अपने प्रश्न का उत्तर पाने को। मेरा विश्वास करना अश्वराज! मैं धोखेबाज नहीं थी। शैतान तूताखूता के सम्मोहन के जादू से बाँध दी गई थी तुम्हारी अश्वकीर्ती।

...अपनी अश्वकीर्ती को क्षमा कर देना अश्वराज! क्षमा कर देना मुझ अभागी को।
और फट पड़ा अश्वराज—
तुम्हारी कसम अश्वकीर्ती! उस वक्त मेरे हाथों से बच निकला था शैतान तूताबूता लेकिन ....
...अब मैं उसे जीवित नहीं छोड़ूंगा! आकाश-पाताल एक करके भी ढूंढ़ निकालूंगा मैं उसे।
उधर तूताबूता की आंखों में थी बला की सी चमक—
दादूबोरा! अश्वराज कारू के तिलिस्म में प्रवेश कर गया है कारू का खजाना लाने को।
तुम्हारी योजना सफल हुई तूताबूता!
तूताबूता! तुम्हें अपना वादा तो याद है न?
हां हां दादूबोरा! खजाना तुम्हारा ही होगा! मुझे केवल अश्वमणि चाहिए! अश्वराज की मौत अश्वमणि! हा हा हा हा! अश्वसम्राट तारपीड़ो की मौत अश्वमणि।
इन दोनों की मौत के बाद राजकुमारी घोड़ी-लेखा भी मेरी होगी और अश्वलोक का राज सिंहासन भी।

खजाने को कारू के तिलिस्म से बाहर निकाल लिया अश्वराज ने—
मेरा सबसे कीमती खजाना अभी तिलिस्म के भीतर है।
वह कीमती खजाना था अश्वकीर्ति का शव—
उसी समय बाहर कुछ अप्रत्याशित घट रहा था—
और—
हा हा हा हा! इस खजाने के लिए कई बरसों तक प्रतीक्षा की है मैंने।
रक्तांबर, कालास्वेर, अश्ववट, नीलकंठ और श्रव्यशक्ति के सामने ही वह कैसी गुस्ताखी कर रहा था—
हा हा हा! अश्वराज यह खजाना मेरा है।

खजाने की सुरक्षा पर तैनात वे पांचों तीव्र स्वर में हिनहिना कर आगे बढ़ने को हुए, किन्तु –
हिन हिन
हा हा हा हा!
ठहर जा दुष्ट कौन है तू?
••• उस रहस्यमय नकाबपोश ने उनका इन्तजाम पहले ही कर रखा था -
अब तुम मेरी धूल भी नहीं पाओगे। हा हा हा हा।
घोड़ों पर चाबुकों की बौछार सी कर दी नकाबपोश ने –
हा हा हा हा
सड़ाक सड़ाक
अश्वराज
क्रोध से चीख पड़ा था अश्वचर!
फिर अश्वराज की तरफ देखते हुए चिल्ला पड़ा वह–
अश्वराज! रोको उसे। कारू का खजाना ले उड़ा है वो दुष्ट नकाबपोश!
घबराओ नहीं अश्वचर! घबराओ नहीं! उसे खजाना नहीं, मिलेगी मौत!

हवा से नहीं तूफान से बातें करता है वो रथ, जिसे खींचते हैं वो पांच जांबाज-
तेज! और तेज दौड़ो! वह अधिक दूर न जा पाया होगा!
इसी के साथ चौंक पड़े तूताखूता और दादूखोरा --
तूताखूता! यह कौन आ टपका बीच में! वह तो खजाना ही ले उड़ा है!
इसकी तो मुझे तलाश थी दादूखोरा!
और चौंक पड़े महर्षि फूकमसान भी --
राजन्! अब वह समय आ गया है! मुझे जाना होगा अश्वराज के पास!
ओह!
गायब हो गए महर्षि फूकमसान! गूंज उठा एक स्वर --
राजन्! तुम महल लौट जाओ! मैं अश्वराज को रोकने जा रहा हूं!
और फिर एकाएक ही घिर गया नकाबपोश का रथ --
रुक जाओ अश्वांतक! मैं तुम्हें पहचान चुका हूं!
ओह! कौन हो तुम?

मुझे नहीं पहचाना अश्वांतक! पहचान लोगे तो होश उड़ जायेंगे तुम्हारे।
अब पहचाना?
सचमुच! बुरी तरह ही उछल पड़ा था अश्वांतक!
तुम तारपीड़ो!
कुदुमछुम्बी के रूप में जन्मी अश्वकीर्ति की तलाश में निकले अश्वराज पर आरम्भ से ही निगाहें रखे हुए था मैं! क्योंकि मुझे तलाश थी शैतान तूताबूता की। मैं जानता था कि अश्वराज की तलाश में तूताबूता आज भी होगा। क्योंकि अश्वराज को ढूंढे बिना उसे कारूं का खजाना मिलना असम्भव था।
कुदुम छुम्बी के अपहरण के पश्चात मुझे विश्वास हो गया कि ये हरकत तूताबूता के अलावा दूसरे किसी की नहीं हो सकती।
इसीलिए तुम्हें देखते ही मैं पहचान गया कि तुम अश्वांतक हो, जिसे मैं कारूं घाटी में अधमरा छोड़ गया था। क्योंकि अगर तुम तूताबूता होते तो कुदुम्बछुम्बी के अपहरण के पश्चात खजाना प्राप्त करने का तुम्हारा यह ढंग बिल्कुल गलत था।
अश्वांतक व्यंग्य से मुस्कराया—
तारपीड़ो! अपने शिष्यों की शक्ति दिखाकर मुझे रोकना चाहता है।
नहीं, अश्वांतक नहीं! पिछली बार हमारा संग्राम अधूरा ही छूट गया था।
तारपीड़ो के हाथ में प्रकट हुईं दो तलवारें।

यह ले अश्वांतक! युद्ध कर! अगर तू जीत गया तो ये खजाना सचमुच तेरा ही होगा।
अश्व रूप में आ गए दोनों ही।
तारपीड़ो के शिष्य वहां से गायब हो गए। और अश्वांतक तीव्र हुंकार भरता रथ से नीचे उतर आया—
आज तू भी नहीं बचेगा तारपीड़ो!
टकरा गईं दोनों की तलवारें—
खनन
खनक
हममें से एक का ये अंतिम संग्राम होगा अश्वांतक!
हममें से एक का नहीं तारपीड़ो, सिर्फ तेरा। सिर्फ तेरा।
सांय
बच तारपीड़ो बच।
कड़क
भरपूर तेजी से वार करता चला गया अश्वांतक—
खनाक

लेकिन! तारपीड़ो का पहला वार ही न बचा सका अश्वांतक—
स्वच्च
आह!
उसका पहला वार ही आखिरी वार साबित हुआ अश्वांतक के लिए—
अश्वांतक! वार करने से पूर्व वार बचाना आना चाहिए!
फिर न उठ सका अश्वांतक।
आंधी की तरह आ पहुंचा अश्वराज भी वहां—
अश्वराज!
पिताश्री!
पूरी श्रद्धा के साथ चरण-स्पर्श करने के पश्चात आश्चर्य के साथ कह उठा अश्वराज—
पिताश्री! आप यहां! और ये तो अश्वांतक है!
हां अश्वराज! तुम्हारे दुश्मनों की कमी नहीं अतः तुम्हारे पीछे-पीछे आना पड़ा मुझे भी।
मेरे इन बारह अंगरक्षकों से भी तुम मिल चुके हो।
ओह! तो वे आप थे, जो मुझे कारूं का खजाना लाने से रोकना चाहते थे पर, क्यों?

क्योंकि कारूं का खजाना प्राप्त होते ही तूताबूता हम सब के लिए मुसीबत बन जाता।
तूताबूता!?
नाम सुनकर चौंक पड़ा अश्वराज।
यह आप क्या कह रहे हैं पिताश्री! यह खजाना लाने की शर्त तो दादू-बोरा ने रखी थी।
अश्वराज! किसी धोखे में न रहना, इस खजाने के विषय में केवल तूताबूता जानता है या फिर जानता था अश्वांतक, जिसकी लाश तुम्हारे सामने पड़ी है।
भृकुटियों में बल पड़ गए अश्वराज की—
अगर यह शर्त तूताबूता की है पिताश्री तो वह इस खजाने को जीते जी कभी न पा सकेगा।
मैं जा रहा हूं पिताश्री! राजकुमारी कुदुमकुम्बी ही मेरी पूर्व-जन्म की अश्वकीर्ति है। मैं शीघ्र ही लौटूंगा उसे साथ लेकर...

... तूताभूता और दादूबोरा भी बचेंगे नहीं! लौटूंगा तो उनके भी सिर साथ ही होंगे मेरे!
अपना ध्यान रखना पुत्र!
भयानक अट्टहास कर उठा तूता-भूता--
दादूबोरा! आ पहुंचा है अश्वराज तुम्हारे दिए गए स्थान पर कारू का खजाना लेकर! हा हा हा!
जाओ दादूबोरा! किले के बाहर जा-कर उसका स्वागत करो। हा हा हा!
किन्तु तूताभूता?
घबराओ नहीं दादूबोरा! मुझ पर यकीन करो। मेरे होते वह कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा तुम्हारा।
ओह!
ठीक है तूताभूता! मुझ पर नजर रखना! कोई खतरा दिखे तो बचा लेना मुझे!

किले से बाहर निकला दादूबोरा —
आओ अश्वराज! स्वागत है तुम्हारा! आखिर तुम ले आए कारूं का खजाना!
खुलवा उठे अश्वराज के नेत्र —
इतनी जल्दी भी क्या है दादूबोरा! तुम शायद खजाना पाने की शर्त भूल रहे हो।
राजकुमारी कुदुमसुम्बी मेरे हवाले करो दादू!
ओह!
इसी पल गूंज उठा एक भयानक अट्टहास —
हा हा हा हा
?
!!!
एक स्वर गूंज उठा —
दादूबोरा! अश्वराज को राजकुमारी कुदुमसुम्बी मैं दे दूंगा। तुम मौत का सफर तय करो। हा हा हा।
नहीं!

भय से चीख पड़ा दादूबोरा—
नहीं! तूताबूता! ये दगाबाजी है। रोक लो इसे।
भयानक चीत्कार करता उल्लू टूट पड़ा दादूबोरा पर—
दादूबोरा की चीख गूंज उठी—
अश्वराज! मुझे बचा लो! मुझे बचा लो अश्वराज!
यह हरकत शैतान तूताबूता की है। दादूबोरा से अपना मतलब हल होते ही उसने इसे मरवा डाला।
दादूबोरा को लाश में बदल कर उल्लू किले में वापस चला गया।
सतर्क था अश्वराज—
तूताबूता के किसी भी आक्रमण से बचना होगा मुझे!

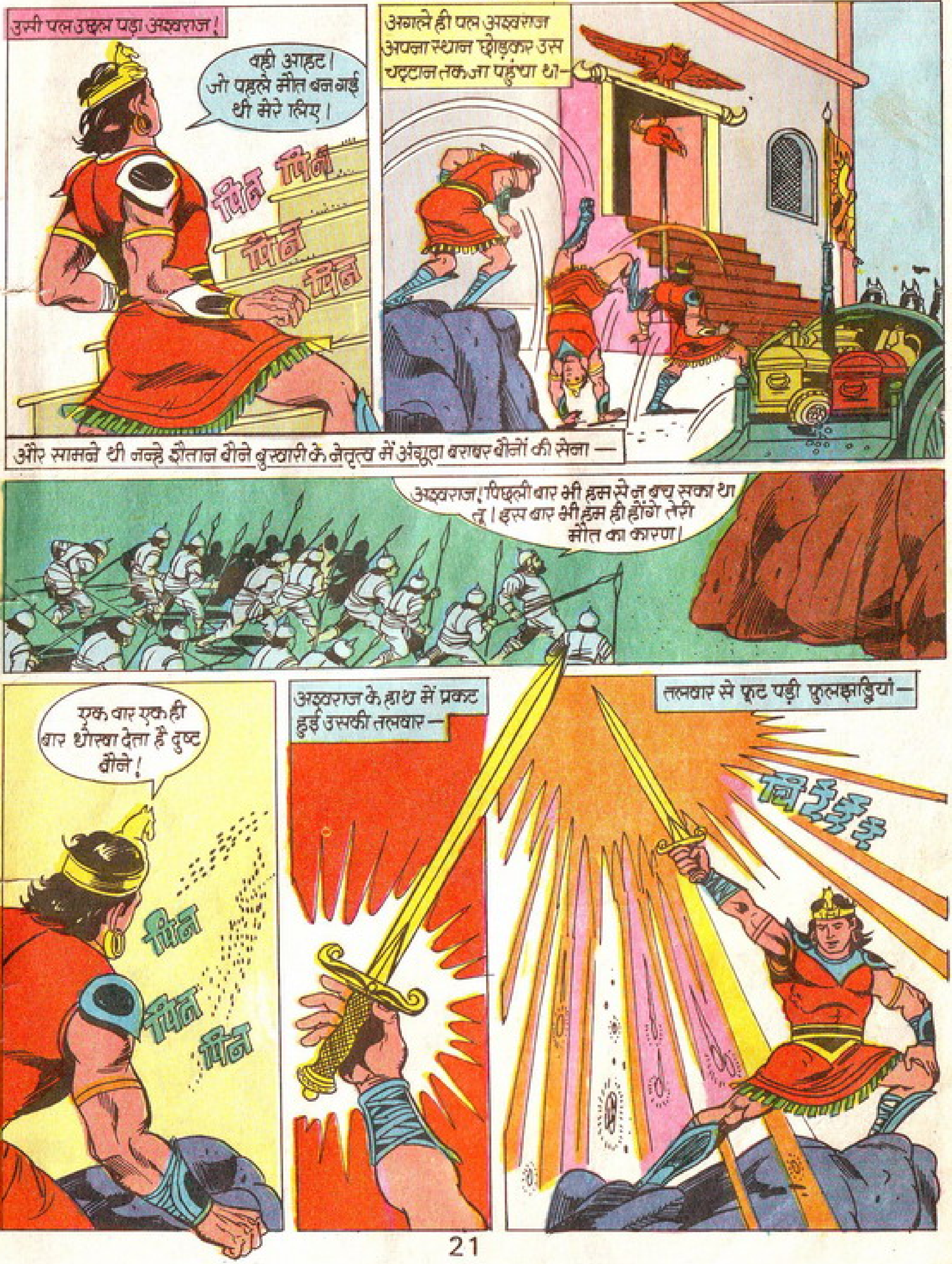
उसी पल उछल पड़ा अश्वराज!
वही आहट! जो पहले मौत बन गई थी मेरे लिए।
अगले ही पल अश्वराज अपना स्थान छोड़कर उस चट्टान तक आ पहुंचा था—
और सामने थी नन्हे शैतान बौने बुखारी के नेतृत्व में अंगूठा बराबर बौनों की सेना—
अश्वराज! पिछली बार भी हम से न बच सका था तू। इस बार भी हम ही होंगे तेरी मौत का कारण।
एक बार एक ही बार धोखा देता है दुष्ट बौने!
अश्वराज के हाथ में प्रकट हुई उसकी तलवार—
तलवार से फूट पड़ी फुलझड़ियां—

बुल्वारी सहित पूरी सेना भुट्टे की तरह भूनने लगी —
तूताबूता! आज तुझे मेरे हाथों से कोई न बचा पायेगा। अन्यथा राजकुमारी कुदुम को मेरे हवाले कर दे दुष्ट शैतान!
द्वार पर प्रकट हुआ तूताबूता —
अश्वराज! राजकुमारी कुदुमछुस्वी की रिहाई चाहते हो तो अश्वमणि को खजाने से निकालकर मुझे सौंप दो।
ओह! शैतान तूताबूता!
मैं तुझे अश्वमणि सौंप रहा हूं शैतान!
सौदा एक हाथ ले, एक हाथ दे होगा शैतान!
मुझे मंजूर है।
अपनी कमर पर लटकी जादुई डिबियों में से एक उतारकर •••

...जादुई डिबिया का ढक्कन खोल डाला उसने —
यह रही तुम्हारी कुदुमछुम्बी अश्वराज!
राजकुमारी कुदुमछुम्बी!
अश्वराज!
जाओ अश्वराज! अश्वमणि फेंक दो!
अश्वमणि लेकर मेरा घोड़ा तुम्हारे पास आयेगा तूताबूता!
शैतान तूताबूता के चेहरे पर थे भयानक भाव—
अश्वराज ने अश्वदल को अलग किया।
तूताबूता! राजकुमारी कुदुमछुम्बी के साथ ही कदम आगे बढ़ायेगा मेरा घोड़ा!
ठीक है अश्वराज छोड़ दो घोड़े को, मैं राजकुमारी को इधर से चलता कर रहा हूं!
जाओ कुदुमछुम्बी!

अश्ववट राजकुमारी कुदुमछुम्बी के साथ-साथ कदम आगे बढ़ा रहा था—
उफ! क्या चीज है ये अश्वमणि? अगर इस शैतान के हाथ लग गई तो क्या करेगा ये?
और फिर गजब कर दिया अश्ववट ने—
राजकुमारीजी जल्दी कीजिए। मेरी पीठ पर सवार हो जाइये।
उफ! बोलने वाला घोड़ा!
आनन-फानन में ही राजकुमारी कुदुमछुम्बी ने भरी एक उछाल, और लटक सी गई वह अश्ववट की पीठ पर—
उफ!
वापस दौड़ पड़ा अश्ववट—
हिनन
धोखा! अश्वराज! यह धोखा बहुत महंगा पड़ेगा तुझे।

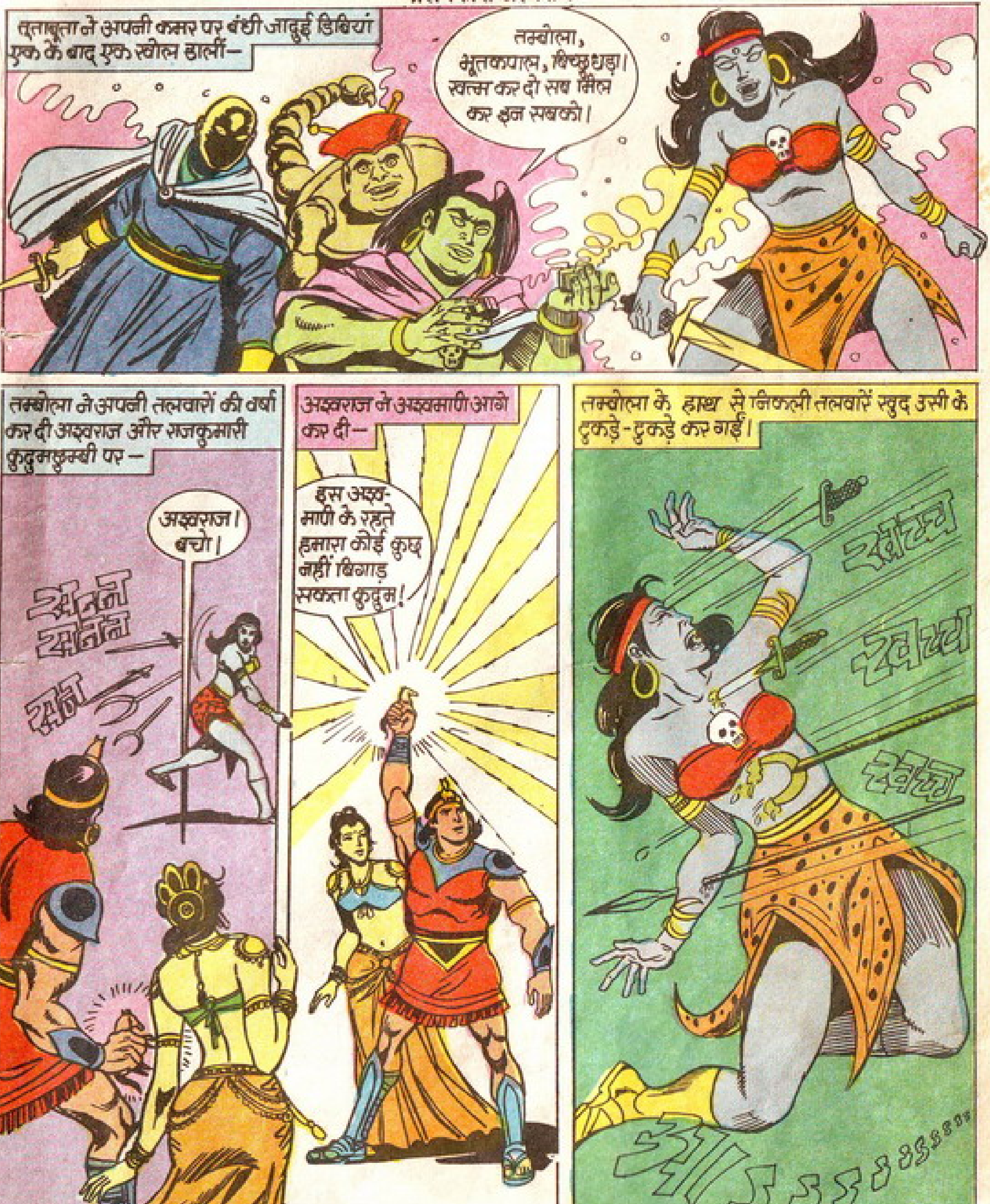
तताबूता ने अपनी कमर पर बंधी जादुई डिबियां एक के बाद एक खोल डालीं—
तम्बोला, भूतकपाल, बिच्छूधड़ा। खत्म कर दो सब मिल कर इन सबको।
तम्बोला ने अपनी तलवारों की वर्षा कर दी अश्वराज और राजकुमारी कुदुमकुम्बी पर—
अश्वराज। बचो।
खनन खनन
खन
अश्वराज ने अश्वमणी आगे कर दी—
इस अश्वमणी के रहते हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता कुदुम!
अश्वमणी से निकली दिव्य किरणें तलवारों पर पड़ीं।
तम्बोला के हाथ से निकली तलवारें खुद उसी के टुकड़े-टुकड़े कर गईं।
खच्च
खच्च
खच्च
आ ऽ ऽ ऽ ऽ

भूतकपाल अपना शस्त्र लेकर टूट पड़ा उन पर—
तुम सबको मार डालूंगा। हा हा हा।
तुम भी आओ भूतकपाल! पहले बच गये थे तुम। अबकी नहीं बचोगे।
अश्वराज ने किया उसका सामना—
खनाक
भूतकपाल न टिक सका प्रलयंकारी अश्वराज की तलवार के सामने—
बिच्छूधड़ा! इन सब के जिस्मों में अपने विषैले डंक भर दो।
बिच्छूधड़ा ने विषैले डंकों की बौछार करदी—
अश्वमणि की दिव्य किरणों से वे विषैले डंक मोम की तरह पिघल गये—

पागल सा हो गया था तूताभूता —
जंगली बिल्ली तुझे फाड़ डालेगी अश्वराज! हा हा हा!
अश्वराज! बच तेरी मौत आई!
अश्वराज से पहले इस बार कूद पड़ी राजकुमारी कुदुमछुम्बी—
अश्वराज! इस चुड़ैल को मेरे लिए छोड़ दो!
कुदुमछुम्बी में भी थी बला की फुर्ती —
अगला वार किया अश्वपट ने —
अश्वराज! स्त्री जाति पर तो तुम वार करोगे नहीं! एक मौका मेरे लिए भी है ये!
कुदुमछुम्बी ने केश पकड़कर घुमा दिए उसके—
जंगली बिल्ली से भीगी बिल्ली बनाकर छोड़ूंगी तुझे!

जंगली बिल्ली सचमुच भीगी बिल्ली बनी आ गिरी तूताबूता के पैरों पर—
नहीं! उफ! मेरे सभी वार बेकार चले गए!
हताश तूताबूता का आखिरी वार यही बचा था—
अश्वराज! मुझसे द्वन्द्व कर! जो जीता वही ले जायेगा इस खजाने और अश्वमणि को!
तेरी ये इच्छा भी पूर्ण करूंगा तूताबूता!
अश्वमणि कुदुमछुम्बी को सौंपकर अश्वराज जा पहुंचा तूताबूता के सामने—
आ तूताबूता! पहला वार कर!
अश्वराज! दूसरी बार तुझसे मात नहीं खाऊंगा!
तूताबूता ने तलवार घुमाई! लेकिन—

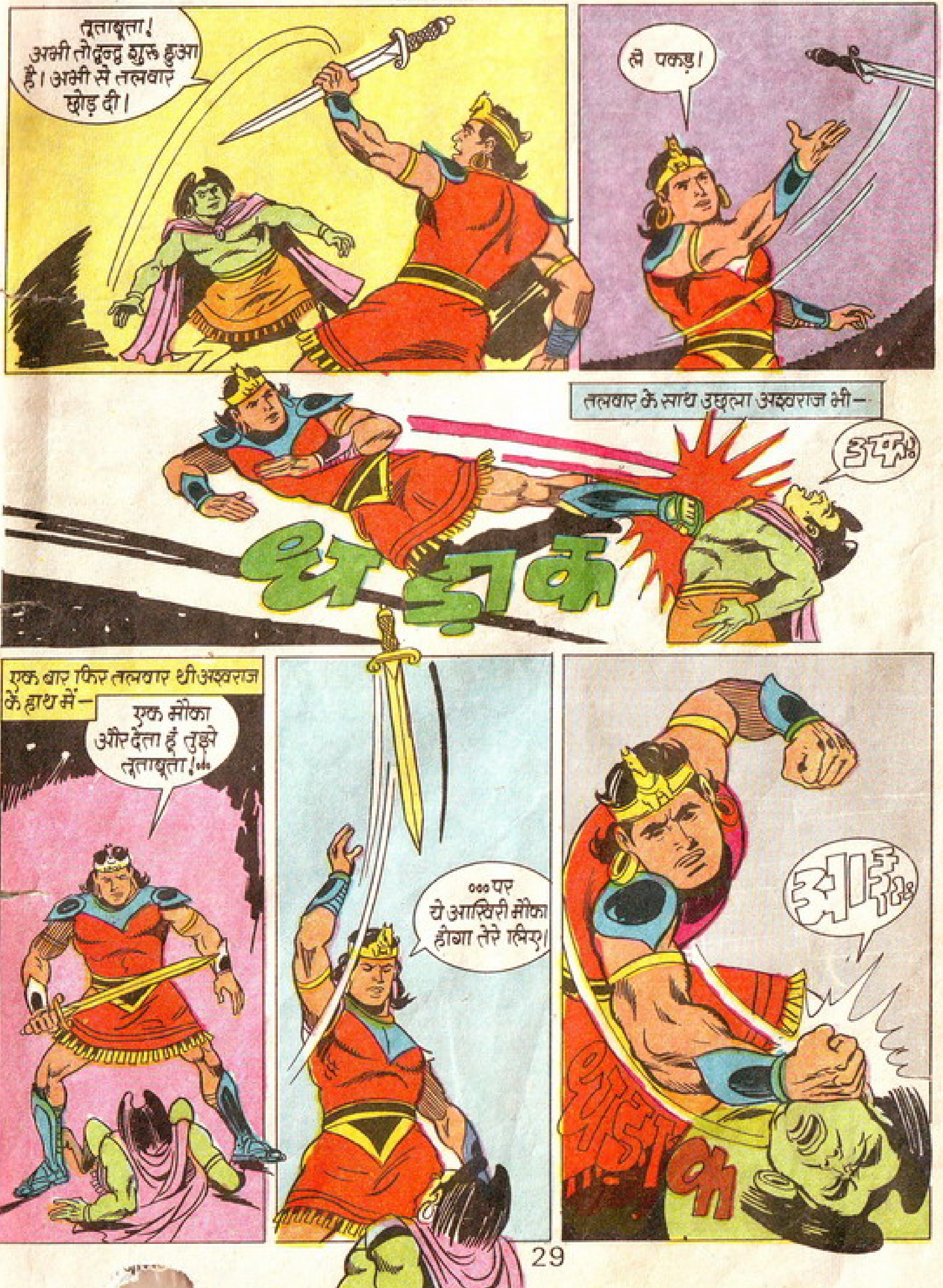
तूताखूता! अभी तो द्वन्द्व शुरू हुआ है। अभी से तलवार छोड़ दी।
ले पकड़!
तलवार के साथ उछला अश्वराज भी—
उफ्फ्!
धड़ाक
एक बार फिर तलवार थी अश्वराज के हाथ में—
एक मौका और देता हूं तुझे तूताखूता!...
...पर ये आखिरी मौका होगा तेरे लिए!
आह्ह्!

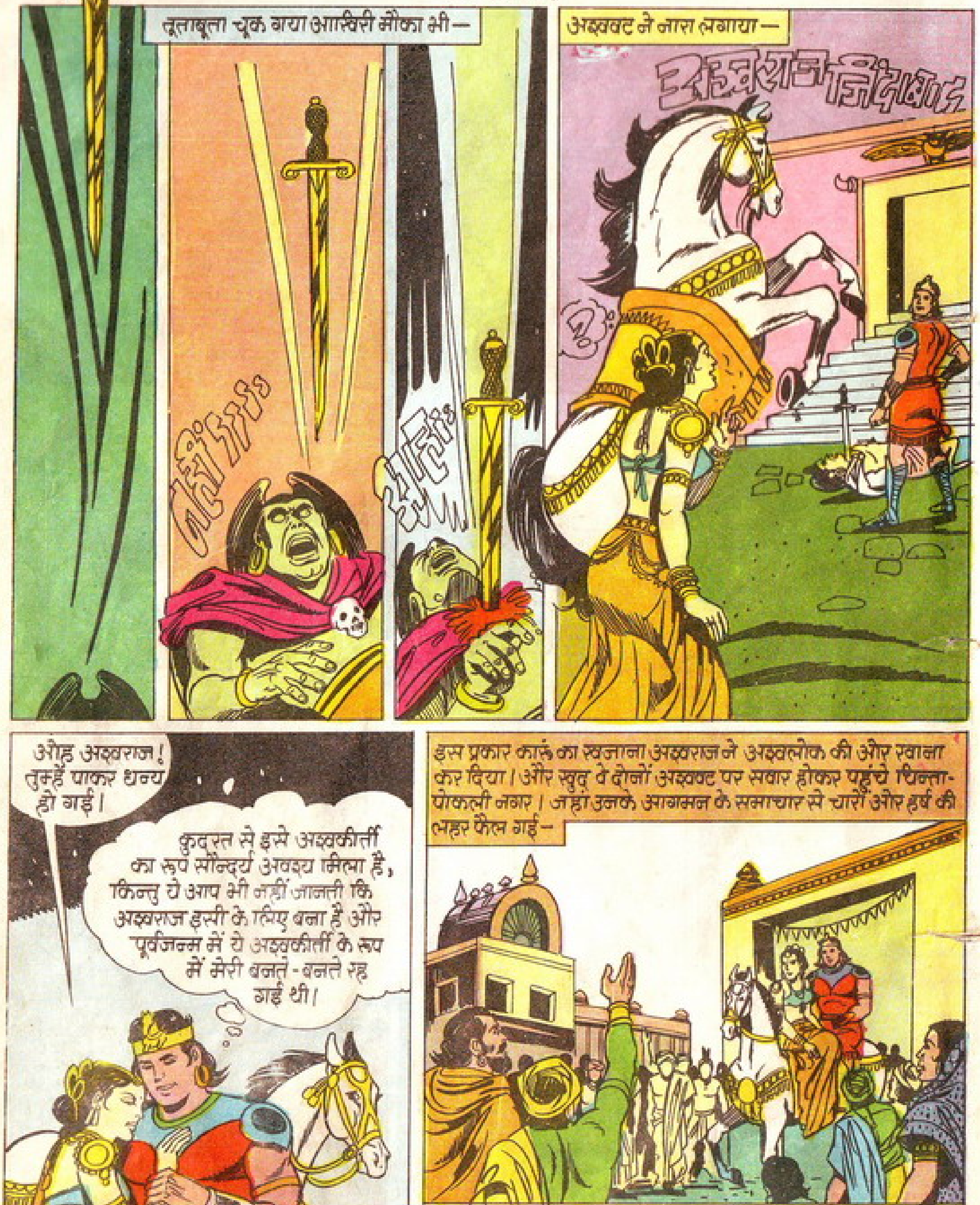
तूताबूला चूक गया आखिरी मौका भी—
अश्ववट ने नारा लगाया—
अश्वराज जिंदाबाद
ओह अश्वराज! तुम्हें पाकर धन्य हो गई।
कुदरत से इसे अश्वकीर्ती का रूप सौन्दर्य अवश्य मिला है, किन्तु ये आप भी नहीं जानती कि अश्वराज इसी के लिए बना है और पूर्वजन्म में ये अश्वकीर्ती के रूप में मेरी बनते-बनते रह गई थी।
इस प्रकार कारूं का खजाना अश्वराज ने अश्वलोक की ओर रवाना कर दिया। और खुद वे दोनों अश्ववट पर सवार होकर पहुंचे चिन्तापोकली नगर। जहां उनके आगमन के समाचार से चारों ओर हर्ष की लहर फैल गई—
राजा चिंतित सिंह की चिन्ता भी कम हुई थी। किन्तु वे जानते थे कि अब कुमकुमछुम्बी पराई हो चुकी है।

(समाप्त)